RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

इतिहास लेखन की वैदिक परम्परा

डॉ. सुनिता सिन्हा

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

भारतीय इतिहास लेखन की निरर्थक आलोचना करने के स्थान पर भारतीय विशिष्ट इतिहास दृष्टि को आत्मसात करना अभिष्ट है। हीरानन्द शास्त्री का यह विचार समीचीन नहीं है कि प्राचीन भारतीयों ने इतिहास की ओर ध्यान नहीं दिया। जहाँ तक भारतीयों की तथाकथित अ–ऐतिहासिकता के स्त्रोत को उनके दार्शनिक सिद्धान्तों में देखने का प्रश्न है, यह ध्यातव्य है कि भारतीय विचार में वर्तमान जीवन को कभी भी सर्वथा नगण्य नहीं माना गया है। ''इह चैव वेदिथ''–सत्य को यहीं जानना है और इसी जीवन में ही धर्म का आचरण करना है, सदैव से ही हिन्दू धर्म की यह निष्ठा रही है। कर्म और मायावाद के सिद्धांतो को निष्क्रियता एवं निरपेक्षता का स्त्रोत मानना इन सिद्धांतो के अज्ञान का परिचायक है। कर्म के सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या यथास्थान आगे की जाएगी।[1] यहाँ केवल यह जान लेना पर्याप्त है कि कर्मवाद नियतिवाद से भिन्न है तथा क्रिया–स्वातन्त्रय की अपेक्षा रखता है। मायावाद के प्रसिद्ध प्रतिपादक शंकराचार्य भी उन कार्यों से विमुख नहीं हुए जिनका निर्वाह वे प्रतिपादन और प्रचार करने वाला दार्शनिक क्या संसार के मिथ्यात्व को इन विद्वानों के अनुसार समझता था ? संसार के मिथ्यात्व के प्रतिपादन का स्तर दूसरा है, इसमें दृश्यमान विश्व की सामान्यतया मान्य यथार्थता और तदनुसार उत्तरदायित्व–निर्वाह का तिरस्कार नहीं निहित है। जगत् के मिथ्यात्व का अर्थ केवल इतना है कि यह परम सत्य नहीं है।[2] परम सत्य केवल ब्रह्म् है और जगत् उसका विवर्त है, जगत् की सत्यता तद्प्रसूत सत्यता है तथा इसकी मिथ्या सत्ता केवल किसी अन्य सत्ता पर आश्रित होने के कारण है।

इस अभियोजन के प्रत्याख्यान में बहुत कुछ कहा जा सकता है।[3] वास्तविकता यह है कि कर्म और मायावाद से विश्वास होने पर भी भारतीयों ने एक गौरवपूर्ण इतिहास का निर्माण किया और भारतीय इतिहास के अज्ञानी ही उनकी महती उपलब्धियों से अपरिचित होंगे। इस जीवन के महत्त्व को भारतीयों ने सदैव समझा। 'चरेवेति चरैवेति' भारतीय ऋषियों की वाणी रही है 'इह चैव वेदिथ'–सत्य को यहीं जानना है। भारत कर्मभूमि है – ऐसा विभिन्न ग्रन्थों में कहा गया है[4]।

किन्तु, यह सत्य है कि इतिहास जिस रुप में आज परिभाषित होता है उस रुप में भारतीयों ने इतिहास–रचना नहीं की। भारत में अतीत को स्मृति इतिहास के रुप में नहीं सुरक्षित की गई।[5] अतीत दो प्रकार का होता है:– (1) मृत अतीत जैसे घटनाएँ, व्यक्ति इत्यादि, तथा (2) जीवन्त अतीत अर्थात् परम्पराएँ जिनका एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सम्प्रेषण होता रहता है। भारत में परम्पराओं की सुरक्षा का प्रयास ऐतिहासिक स्मृति के रूप में नहीं किया जाता था। इसमें सभी की क्रियात्मक सहभागिता आवश्यक समझी जाती थी। विश्व में कोई भी देश ऐसा नहीं जिसने इतने सुदूर अतीत का इतना बड़ा भाग सुरक्षित रखा हो। भारत में सदैव यह विश्वास किया गया कि हम अतीत के वंशधर हैं जिसकी सुरक्षा हमारा कर्त्तव्य है तथा जिसमें योगदान करते हुए हमें ऋणमुक्त होना है। वैदिक युग से ही यह विश्वास प्रचलित था कि मनुष्य तीन ऋणों–पितृऋण, देवऋण तथा ऋषिऋण–के साथ उत्पन्न होता है तथा इन ऋणों सें मुक्ति पाने के लिए क्रमशः वंश–वर्धन, विद्याभ्यास एवं याज्ञिक कर्म की अपेक्षा है। अतएव, निश्चित रूप से परम्परा के प्रति चेतना तथा उत्तरदायित्व की भावना भारतीयों में विद्यमान थी। आज भी दक्षिण भारत में ऐसे पण्डित हैं जो वैदिक यज्ञों का सम्पादन उसी कुशलता के साथ कर सकते हैं जैसे वे 3000 वर्ष पूर्व सम्पादित होते थे। इसी भावना के कारण प्राचीन ग्रन्थों का समय–समय पर सम्पादन तथा उन्हें निरन्तर नूतन एवं बुद्धिगम्य बनाए जाने का प्रयास किया जाता रहा। महाभारत को सदैव समयानुकूल बनाया जाता रहा। इसी प्रकार पुराणों में परिवर्द्धन तथा परिवर्तन आधुनिक युग तक किए जाते रहे।[6]

भारतीयों की तथाकथित अ–ऐतिहासिक के अभियोजन के पीछे भारत में ऐतिहासिक रचनाओं की अपेक्षाकृत क्षीण उपलब्धि भी है। यहाँ यह स्मरणीय है कि संभवतः प्राप्त सामग्री वस्तुतः अस्तित्वमान् सामग्री का अत्यन्त थोड़ा अंशमात्र है। ज्ञान की एक शाखा अथवा अध्ययन के एक विषय के रूप में इतिहास को अत्यन्त आदरणीय स्थान प्राप्त था। शासकों के लिए इतिहास–अध्ययन पर बल देते हुए कौटिल्य ने इसके व्यावहारिक लाभा को स्वीकार किया है। साथ ही, इसके प्रमाण उपलब्ध हैं कि शासकों के यहाँ शासकीय तथा प्रशासकीय विवरण तैयार किया जाता था। कम से कम मौर्यों के समय से तत्सम्बन्धी विभाग का होना एक ऐतिहासिक तथ्य है। गुप्त अभिलेखों में 'अक्षपटलाधिकृत' नामक अधिकारी का उल्लेख है। विविध शासनवंशीय उथल–पुथलों के कारण ये विवरण अब अप्राप्य हैं।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

यह कहना सत्य नहीं है कि भारत में इतिहास उपेक्षित रहा। तथापि, कुछ अर्थों में इसकी उपेक्षा की गई। उदाहरण के लिए, जब भी किसी धर्म अथवा दर्शन की प्रमुख परम्परा का संकलन किया गया, इसके प्रलेखों अथवा प्रतिपादकों के विषय में ठीक–ठीक तथा विस्तृत विवरण नहीं रखा गया। न ही परवर्ती अंशों को प्राचीनतर भाग से पृथक् रखने की चेष्टा की गई। वृहद्काय वेदों, पुराणों के रचनाकारों के विषय में हम सर्वथा ज्ञान–शून्य हैं। इसी प्रकार जब रामायण, महाभारत तथा पुराणों को अनुश्रुत इतिहास के रूप में कल्पित किया गया तथा उन्हें काल्पनिक अथवा अर्धकाल्पनिक प्राचीनता से समन्वित किया गया तो एक आलोचनात्मक विवेक द्वारा ऐतिहासिक सामग्री को अनैतिहासिक सामग्री से पृथक् नहीं किया गया। शासकीय प्रलेखों के आधार पर जब वाणरचित हर्ष चरित तथा कल्हणरचित राजतरग्डि.णी जैसी ऐतिहासिक जीवनियाँ लिखी गईं तो इतिहास और कल्पना के समन्वयन को बचाने के लिए उपयुक्त चेष्टा नहीं की गई। यद्यपि राजतरंगणी के तथ्यों को कल्पना से पृथक् करने का प्रयास है, किन्तु सामान्यतया यहाँ भी इतिहासकार कवि की भूमिका ग्रहण करते हुए दिखाई पड़ता है।

वस्तुतः भारतीयों ने केवल जानकारी के लिए ऐतिहासिक तथ्यों के लेखन में अपेक्षित रूचि नहीं ली। अतीत तथा इसकी स्मृति की सुरक्षा को उन्होंने धार्कि तथा काव्यात्मक मूल्यों के अधीनस्था रखा। इतिहासकार एक आलोचनात्मक बुद्धि से समन्वित तथा केवल अतीत के तथ्यों में रूचि रखने वाला व्यक्ति होता है तथा इतिहास एक आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक तथा पक्षपात शून्य लेखन है–इतिहासकार तथा इतिहास का यह आदर्श भारतीयों द्वारा अधिक महत्त्व ग्रहण करता हुआ नहीं प्रतीत होता।

अतीत के विषय में जो वस्तुतः महत्त्वपूर्ण है वह है उत्तराधिकार रूप में प्राप्त विचार तथा आदर्श, न कि ऐतिहासिक विवरणों की निरन्तरता। वस्तुतः यह मूल्यों की बात है।[7] वस्तुतः ऐतिहासिक प्रक्रिया का वास्तविक अर्थ सभी सांस्कृत प्रकरणों को अर्थ के एक विकासशील संदर्भ के प्रकरण के रूप में प्रतिष्ठित होने अथवा दूसरे शब्दों में, आत्म–बोध की गवेषणा के रूप में लिए जाने में निहित है वैयक्तिक जीवन के स्तर पर भी कोई व्यक्ति अपने अतीत से सम्बन्धित सभी घटना तथा व्यक्तियों को याद नहीं रखता है जिन्हें वह कुछ महत्त्व प्रदान करता है। इसी प्रकार किसी भी समाज अथवा संस्कृति में वहीं बातें सुरक्षित रखी जाती हैं जिन्हें वह अपने लिए आवश्यक तथा मूल्यवान समझती है। प्राचीन यूनानी तथा चीनी संस्कृति राज्य को सर्वोपरि महत्त्व दिया गया तथा इसे मानव जीवन की सभी आकांक्षाओं की पूर्ति का निमित्त माना गया। राजा देव–पुरूष होता था जो मनुष्य तथा आकाश के बीच स्थित था तथा राज्य की समृद्धि अथवा विपदात्मक स्थिति उसके कुशल अर्थ अकुशल आचरण का प्रतिबिम्बन मात्र समझी जाती थी।

संदर्भ ग्रंथ–सूची :–

1. बी.जी. गोखले, इण्डियन थॉट थ्रू दी एजेव : ए स्टडी ऑफ सम डामिनेन्ट कान्सेत्प्टस, बाम्बे, 1961
2. जी0 सी0 पाण्डे, द मीनिंग एण्ड प्रोसेज ऑफ कल्चर, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क, आगरा, 1972
3. यू0 एन0 घोषाल, स्टडीज इन इण्डियन हिस्टरी एण्ड कल्चर, कलकत्ता, 1957
4. वाटर्स (सं0) युवान च्वांग ट्रेवेल्स इन इण्डिया, लंदन, 1904
5. माइकेल मरे माडर्न फिलासफी ऑफ हिस्टरी : इट्स ओरिजिन एण्ड डेस्टिनेशन दी हेग, 1970
6. अर्थशास्त्र, 1.5.10
7. एम0आर0सिंह : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द जीओग्रॉफिकल डेटा इन दी अर्ली पुराणज, पंथी पुस्तक, कलकता, 1972